प्रकाशनार्थ

पटना, 23 फरवरी। भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आइएसआइ), कोलकाता के प्रोफेसर इंद्रनील दासगुप्ता द्वारा ''मत छुओ : ग्रामीण भारत में समूह संघर्ष, जातिगत शक्ति और अस्पृश्यता'' विषय पर एक व्याख्यान दिया गया। इस शोध वेबिनार का आयोजन एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) द्वारा किया गया था। प्रोफेसर दासगुप्ता और इस आलेख की सहलेखक यूनाइटेड किंगडम के सर्रे विश्वविद्यालय की शर्मिष्ठा पॉल ने संपत्ति के स्वामित्व और छुआछूत के बर्ताव की प्रवृत्ति के बीच के संबंध का विश्लेषण किया। उनलोगों का कहना था कि अगड़े या अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) परिवारों में छुआछूत की प्रवृत्ति पूरी तरह से उनकी अपनी स्थिति के जरिए ही नहीं निर्धारित होती है। इसका निर्धारण व्यवहार संबंधी कसौटियों पर राजनीतिक संघर्ष के जरिए जातिगत और धार्मिक, दोनो के आधार पर बंटे समूहों के बीच संसाधनों के वितरण के आधार पर भी होता है। उनका तर्क था कि सामूहिक रूप से अनुसूचित जातियों, या मुसलमानों अथवा ईसाइयों की संसाधन शक्ति जैसे-जैसे बढ़ेगी, वैसे-वैसे उच्च जाति या अन्य पिछड़ा वर्ग के परिवारों द्वारा छुआछूत के बर्ताव में कमी आने की संभावना भी बढ़ती जाएगी। हालांकि अन्य पिछड़ा वर्गों से उच्च जाति के लोगों की ओर शक्ति की थोड़ी मात्रा में भी पुनर्वितरण होने पर इसमें कमी आ सकती है। वहीं, उच्च जाति और अन्य पिछड़ा वर्ग की शक्ति संयुक्त रूप से बढ़ने पर छुआछूत का प्रचलन अधिक व्यापक होगा।

वेबिनार की अध्यक्षता आद्री की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अस्मिता गुप्ता ने की। बेबिनार में प्रख्यात विद्वान बारबरा हैरिस व्हाईट सहित करीब 50 अन्य समाजशास्त्रियों ने भी शिरकत की।

(अंजनी कुमार वर्मा)